तरुण शांति सेना
राजघाट
वाराणसी -221001
6 जून 1973

प्रिय मित्र

'शिक्षा में क्रांति' तरुण शांति सेना का एक मूलभूत कार्यक्रम है। 'शिक्षा में क्रांति' की आवश्यकता अन्य सभी लोग महसूस करते हैं लेकिन मेडिकल शाखा के विद्यार्थी उसके प्रति उदासीन हैं। इसके मुख्य कारण दो हैं:

1. मेडिकल शिक्षा में theory और practical में अलगाव पैदा नहीं हुआ है। theory के साथ practical शिक्षा भी दी जाती है। इसलिए अन्य शाखाओं की तरह वह केवल किताबी शिक्षा नहीं है।
2. डॉक्टर की मांग और प्रतिष्ठा समाज में होने से बेकारी और विफलता की तलवार मेडिकल के छात्रों के सर पर टंगी हुई नहीं है। इसलिए शिक्षा में क्रांति की बात उन्हें अपील नहीं करती।

लेकिन अगर सिर्फ व्यक्तिगत सुरक्षा को न देखते हुए अधिक व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण से देखें तो ध्यान में आता है कि हमारे देश की मेडिकल शिक्षा में बहुत सी खामियां हैं। आपने खुद उन्हें कई बार महसूस किया होगा।

हमारे एक डॉक्टर साथी के अनुसार रोगियों का इलाज करते समय वह अपने को तीन कारणों से असहाय महसूस करता है:

1. बीमारियों के etio-pathogenesis (सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व वातावरणीय कारणों) पर डॉक्टर का कोई नियंत्रण नहीं है। इसलिए समाज अपनी ग़लत व्यवस्था के कारण सतत नये रोगियों का निर्माण करते रहता है और डॉक्टर जिसे रोक न सकने के कारण सिर्फ रोगियों का इलाज करता रहता है, रोग के मूल पर आघात नहीं कर सकता।
2. Investigation की सुविधाएं अस्पताल के बाहर बहुत कम प्राप्त होने से रोग का ठीक ठाक निदान भी वह नहीं कर पाता। इसलिए सिर्फ तात्कालिक व symptomatic इलाज के सिवाय उसके पास और कोई चारा नहीं बचता।
3. इलाज का खर्च (दवा, आराम, खाना, नर्सिंग) और रोगी की आर्थिक स्थिति, दोनों उसके हाथ में न होने से कई बार इलाज असंभव हो जाता है। इन कारणों से यह लाजमी हो जाता है कि डॉक्टर रोग व रोगी के सामाजिक पहलुओं पर भी

विचार करें। हमारी सामाजिक व्यवस्था के प्रति एक जिम्मेदार डॉक्टर उदासीन नहीं रह सकता।

मेडिकल कॉलेजों का वातावरण भी ऐसा होता है जिसमें छात्रों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का भान कराने का कोई प्रयास नहीं किया जाता।

डॉक्टरी के काम का दिन-ब-दिन बढ़ता व्यवसायीकरण एक चिंता का विषय है।

हमारी मेडिकल शिक्षा भारत की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थिति से मेल नहीं खाती। सब विचार, शिक्षा व इलाज पश्चिम के अनुकरण से होता है। इन सब कारणों से हमारा डॉक्टर अपने ही देश और समाज में outsider सा है। यहां adjust करना, काम करना उसे मुश्किल हो जाता है, खासकर देहातों में।

आप सिर्फ एक मेडिकल के छात्र या डॉक्टर ही नहीं है, समाज की समस्यायों पर विचार करते हैं तथा समय समय पर कृति भी करते हैं। आपने भी इस बारे में जरूर कुछ सोचा होगा।

साथ में आपको श्री प्रभाष जोशी का साप्ताहिक सर्वोदय में लिखा एक लेख भी भेज रहे हैं। उसमें व्यक्त विचारों व इस पत्र में उठाये मुद्दों के बारे में आप व आपके साथी क्या सोचते हैं ? हमें लिखिएगा।

मेडिकल शाखा में जो अपने अन्य साथी हैं उनके नाम - पते भी हम आपको साथ में भेज रहे हैं। आप उनसे संपर्क रखें तो कोई collective thinking और action evolve हो सकती है।

पत्रोत्तर की अपेक्षा में

अशोक भार्गव

मेडिकल के साथी
अभय बंग, उल्हास जाजू, सुहास जाजू, भक्ति दास्तानें, संघमित्रा देसाई, शिखर जैन, सुधीर जोशी, अश्विन पटेल, रश्मि भावसार, भूमि जगन्नाथन, नवीन मेनन, कल्पना शास्त्री, नवनीत फोजदार, चंद्र जोशी, मोंघीबेन म्यात्रा, ए वी भारतन, मुक्ति मजमुदार, रागिनी प्रेम, ब्रह्मजीत, सुनीत जैन, राजू जोटवानी, निर्मल चोरड़िया, पी के शाह, कांचनमाला, प्रकाश बोंबटकर, शशिकांत अहंकारी